Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 10 | Issue : 7 | July 2024

# राजनांदगाँव में असहयोग आंदोलन एवं राष्ट्रीय चेतना का विकास

**नेहरू दुतकामड़ी[1], डॉ. संजना सिंह[2]**

[1] (शोधार्थी) इतिहास, नेहरू दुतकामडी, कलिंगा वि.वि., रायपुर
[2] सहायक प्राध्यापक, इतिहास, कलिंगा वि.वि., रायपुर (छ.ग.)

## ABSTRACT

भारत का स्वतंत्रता संघर्ष अहिंसक था इतनी बड़ी क्रांति विश्व इतिहास में अभूतपूर्व घटना थी। सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह और असहयोग ही रक्तहीन के मुख्य अस्त्र थे उन्होंने कांग्रेस के मंच से भारतीय स्वतंत्रता के लिए तीन बड़े आंदोलन किये। जिसमें पहला आन्दोलन 1921 में हुआ जिसे असहयोग आंदोलन के नाम से जाना जाता है। यह आंदोलन ऐसे युग में हुआ जब अंग्रेजी राज के खिलाफ बात करना तक गुनाह था। उन्होंने देशवासियों से अन्याय के विरुद्ध पूर्ण असहयोग का आह्वान किया। उन्होंने बताया कि सत्य और न्याय के साथ सहयोग करना जितना बड़ा धर्म है असत्य और अन्याय के साथ सहयोग करना उतना ही बड़ा अधर्म।

यूं तो असहयोग आंदोलन अपने गर्त में अनेकानेक कारणों को समेट कर खड़ी हुई थी पर इतना निश्चित है कि अपनी आवाज को सास्वत रूप में प्रस्तुत करने एवं जनता को इन सब प्रक्रियाओं से अधिकाधिक जोड़ने के लिए तत्कालीन परिस्थितियों में इसकी शुरुआत हुई। एसे महत्वपूर्ण आंदोलन से राजनांदगाँव का वातावरण कैसे अछूता रह सकता था। राजनांदगांव में ठा. प्यारेलालसिंह ने वकालत छोड़ दी। अंग्रेजी शिक्षा का बहिष्कार किया गया और उसके स्थान पर राष्ट्रीय विद्यालय की स्थापना की गयी। विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर पिकेटिंग की गयी, हजारों की संख्या में उन्होंने चरखे बनवाये और लोगों को चरखे का महत्व बताया तथा खादी का प्रचार किया। सियासत के कर्णधारों ने यहां भी दमन चक्र चालू किया। इसके बावजूद भी राष्ट्रीय लहर बलवती होती गयी।

**शब्दकुंजीः** सत्याग्रह, असहयोग, बुनियादी, मौलिक, दमनचक्र आदि

**प्रस्तावनाः**

इतिहास साक्षी है कि मनुष्य ने सदैव से अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई है। सन् 1917 ई. में हुई क्रांति ने विश्व में विभिन्न स्थानों पर हो रहे अत्याचारों व शोषण प्रवृत्ति के विरुद्ध संघर्षरत जन समूहों की आवाज को और भी सशक्त बनाया। भारतीय जनता इससे प्रेरित होकर उन पर हो रहे अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाई। भारतीयों ने उस समय अपना विरोध प्रकट करने के लिए पारम्परिक तरीके को नहीं चुना। उस समय तक राजनीतिक पटल पर महात्मा गांधी का आविर्भाव हो चुका था। उन्होंने भारतीयों को विरोध करने का एक नया मार्ग सुझाया था। यह मार्ग था ''सत्याग्रह'' इसके द्वारा ही महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रिका में अपने उद्देश्यों' में सफलता प्राप्त की थी।

**कार्य प्रणालीः** सत्याग्रह का एक रूप असहयोग है जिसका गांधीजी ने अंग्रेजों की नीतियों का विरोध करने के लिए प्रयोग किया। असहयोग का विचार गाँधी का मौलिक देन नहीं था, इससे भी पूर्व अनेक राजनीतिक विचारकों ने इस विषय में सोचा था, किन्तु राजनीतिक, संघर्ष में साधन के रूप में इसका सर्वप्रथम प्रयोग गांधी जी ने किया।[1]

असहयोग आंदोलन की यह प्रणाली बिल्कुल शांत और अहिंसात्मक थी। उसकी बुनियादी सिद्धांत यह थी कि ब्रिटिश सरकार को उसके क्रूर शासन और भारत के शोषण में सहायता देने से इंकार कर दिया जाए। असहयोग आंदोलन के दो प्रकार के उद्देश्य थे– (1) रचनात्मक (2) ध्वंसनात्मक,

रचनात्मक के अन्तर्गत बेरोजगारों को काम दिलाना, स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करना, आदि। ध्वंसनात्मक का उद्देश्य सभी प्रकार की अंग्रेजी वस्तुओं का बहिष्कार करना था। आजादी के संघर्ष में असहयोग आंदोलन प्रारम्भ होने के पहले भी मध्यप्रांत के अनेक महत्वपूर्ण क्षेत्र, जैसे– रायपुर, रायगढ़, राजनांदगाँव, सरगुजा आदि स्थानों में आंदोलन हुए हैं, जिनका प्रमुख स्तर अहिंसा, सत्याग्रह और असहयोग ही था।[2]

1 अगस्त 1920 को गांधी जी ने असहयोग आंदोलन की घोषणा की थी। इस आंदोलन को प्रारम्भ करने का कोई एक विशिष्ट कारण नहीं था। वरन अनेक कारणों ने मिलकर स्थिति को विस्फोटक रूप दे दिया था। इस आंदोलने के प्रारम्भ होने के कारण निम्न थे– प्रथम विश्व युद्ध, युद्ध का परिणाम, देश की आर्थिक दशा, महामारी का प्रकोप, भीषण अकाल, सेना में भूर्ती और वसूली, सरकारी दमन चक्र, रूसी क्रांति का प्रभाव, रौलेट एक्ट का पारित होना, जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड, सैनिक शासन, हन्टर समिति रिपोर्ट, कांग्रेस द्वारा जांच की मांग आदि।

इन सभी घटनाओं के फलस्वरूप गांधी जी ब्रिटिश सरकार के विरोधी बन गये और उन्होंने असहयोग आंदोलन प्रारम्भ करने का निश्चय किया। 4 सितम्बर 1920 में सम्पन्न कलकत्ता में कांग्रेस के विशेष अधिवेशन में असहयोग कार्यक्रम को अंतिम रूप दिया गया। असहयोग कार्यक्रम पर विचार करने के लिए सितम्बर 1920 में कलकलता में कांग्रेस की विशेष अधिवेशन आयोजित किया गया था।[3]

छत्तीसगढ़ से कलकत्ता अधिवेशन में सम्मिलित होने वाले इस क्षेत्र के प्रमुख नेता थे– ठा. छेदीलाल, ई. राघवेन्द्र राव, रविशंकर शुक्ल, ठा. प्यारेलाल, पं. रत्नाकर, पं. सुन्दरलाल शर्मा, शिव दुलारे मिश्र इत्यादि।[4]

Copyright© 2024, IERJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

**असहयोग आंदोलन का प्रारम्भ एवं कार्यक्रमः**

असहयोग आंदोलन के प्रथम चरण में गांधी जी ने अपनी ''केसर–ए–हिन्द'' के पदक को वापस करके आंदोलन का सूत्रपात किया।[5] इस आंदोलन को सफल बनाने के लिए गांधी जी ने अनेक स्थानों का दौरा भी किया। इसी सिलसिले में गांधीजी राजनांदगांव भी आये थे। उन्हे देखने के लिए राजनांदगांव जिले के नागरिक उमड़ पड़े थे। नागरिक रेल्वे स्टेशन पर गांधीजी की प्रतीक्षा कर रहे थे तभी पुलिस ने उन पर लाठी चार्ज किया। इसके विरोध मे ठा. प्यारेलाल सिंह ने जुलूस निकाला।[6] इस आंदोलन के तहत राजनांदगाँव जिले में सरकारी उपाधियों को त्याग किया गया तथा राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना की गयी, मद्यपान निषेध का भी प्रचार किया गया।[7]

राजनांदगाँव में कुछ छात्रों को स्टेट हाइस्कूल से निकाल दिया गया। अतः उनकी शिक्षा व्यवस्था के लिए एक राष्ट्रीय विद्यालय दिसम्बर 1920 में ठा. प्यारे लाल सिंह, बलदेव प्रसाद, ठा. पन्नालाल सिंह तथा बंशीलाल के प्रयासों से स्थापित किया गया। इस विद्यालय के प्रमुख संचालक बलदेव प्रसाद मिश्र थे। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस कार्यकताओं ने गली–गली घूम कर विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार को प्रोत्साहन दिया तथा विदेशी वस्त्रों की होली, सार्वजनिक स्थानों पर प्रचार किया। यह उल्लेखनीय है कि विदेशी वस्त्रों बहिष्कार के साथ–साथ खादी को लोकप्रिय बनाने के उद्देश्य से महात्मागांधी के आव्हान पर 7 से 15 अक्टूबर 1921 तक छत्तीसगढ़ में खादी सप्ताह का आयोजन किया गया। राजनांदगाँव में भी खादी सप्ताह का आयोजन किया गया।

**शासन का दमनचक्रः** आंदोलन की लोकप्रियता के साथ ही शासन का दमन चक्र भी प्रारम्भ हो गया। प्रमुख कोंग्रसी नेताओं को जेल में ठूंस दिया गया। सार्वजनिक संस्थाओं को गैर कानूनी घोषित कर दिया। उस समय 50 हजार से अधिक व्यक्ति जेलों में बन्द थे । जहां–जहां आंदोलन हुए, वहाँ–वहाँ पर भारतीय दण्ड संहिता की धारा 108 तथा 144 धारा लागू कर दी गई। महत्वपूर्ण नेताओं की गतिविधियों, पर प्रतिबन्ध लगा दिये गये थे। नानाकान साहिब गुरुद्वारे में 4 मार्च 1921 को जमा सिक्ख लोगों पर पुलिस ने अकारण धावा बोल दिया और गोलियाँ चलाई गई जिसमें 195 तीर्थयात्री मारे गये। शासकीय सूचनाओं के अनुसार ''नानाकान जैसे भीषण हत्याकाण्ड पहले कभी नहीं हुआ था। हजारों की संख्या में असहयोगियों को जेलों में बन्द कर दिया गया था।[8]

**असहयोग आंदोलन का प्रभावः** इस आंदोलन के प्रभाव के कारण सम्पूर्ण भारत में जन चेतना का विकास हुआ असहयोग आंदोलन जन आंदोलन बन गया, आगे चलकर इसके अनेक दूरगामी परिणाम हुए। स्वदेशी एवं राष्ट्रीयता का व्यापक प्रसार हुआ। कूपलैण्ड के अनुसार महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय आंदोलन को क्रांतिकारी आंदोलन में परिवर्तित कर दिया।[9] उन्होंने इसे दिशा और उद्देश्य प्रदान किया। काग्रेंस की नीति में भी परिवर्तन हुआ। वैधानिक साधनों के स्थान पर सक्रिय आंदोलन एवं सरकारी विधियों की अवज्ञा की पद्धति को स्वीकार किया गया। गांधी जी के व्यक्तित्व ने सारे देश के लोगों में एक नया विश्वास पैदा किया तथा सारे देश में स्वराज्य की भावना बढ़ने लगी। आंदोलन फलस्वरूप राष्ट्रीय चेतना के साथ–साथ स्वदेश प्रयोग छुआछुत निवारण, खादी का प्रचार, हिन्दू–मुस्लिम एकता आदि गांधीजी के विचारों ने` आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर एवं स्वावलम्बन की भावना को बढ़ाया। गांधी जी ने स्वतंत्रता– समानता के लिए तथा अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने की भारतीयों को प्रेरणा दी। फलस्वरूप राष्ट्रीयता की भावना साकार हो उठी।[10]

अब ब्रिटिश साम्राज्य के अंत की घण्टी बज चुकी थी। गांधी जी के नेतृत्व के फलस्वरूप उत्पन्न ब्रिटिश शासन विरोधी शक्तियों को भारत में ब्रिटेश नौकरशाही द्वारा भली भांति अनुभव किया जाने लगा था।[11] प्रो. कूपलैण्ड के शब्दों में– 'गांधीजी ने भारतीयों को स्वतंत्रता रूपी उद्देश्यों को प्राप्त करने की शिक्षा प्रदान की है, वह भी अहिंसक शक्ति द्वारा। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन को क्रांतिकारी ही नहीं अपितु उसे लोकप्रिय भी बनाया है।[12]

**निष्कर्षः**

उपरोक्त विवरण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि 1857 के समय से भारतीयों के मन में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध असंतोष की भावना व्याप्त हो रही थी। 1858 की घोषणा जिसमें भेदभाव रहित शासन के आश्वासनों को ब्रिटिश सरकार द्वारा पूरा न किया जाना, मांटेग्यू चेम्सफोर्ड में भारत के प्रान्तों में आंशिक उत्तरदायी प्रशासन की सिफारिश करना, भारतीयों के आंदोलनों को कुचलने के लिए, उनके विरोध के बावजूद भी रोलेट कानूनों को पारित किया जाना, जलियावाला बाग का नृशंस हत्याकाण्ड, 1919 का भारत प्रशासन अधिनियम जिसमें भारतीयों के स्वराज्य की आकांक्षा का पूरा न किया जाना तथा खिलाफत का प्रश्न कतिपय ऐसे महत्वपूर्ण कारक थे, जिन्होंने महात्मा गाँधी और उसके नेतृत्व में कांग्रेस को असहयोग की ओर धकेलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ऐसा प्रतित होता है कि ब्रिटिश सरकार जानबूझकर ऐसी परिस्थितियाँ निर्मित कर रही थी, जिससे भारतीय जनगत पूरी तरह उद्वेलित हो जाए। निःसंदेह गाँधीजी के नेतृत्व में होने वाले प्रथम जनआंदोलन असहयोग आंदोलन के लिए उत्तरदायी उपरोक्त घटनाएँ न केवल समूचे भारत के लिए अपितु राजनांदगाँव के लिए भी महान स्वाधीनता आंदोलन के रंगमंच पर उतरने की पूर्व तैयारियाँ थी।

**संदर्भ सूचीः**


1 घोष, देवयानी, ''छत्तीसगढ़ अंचल में स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास'', पृ०–54
2 म.प्र. संदेश, वर्ष–3, अंक 2/10 अगस्त 1977, पृ०–4
3 राव, पी. प्रकाश, द नौन को–आपरेशन मूवमेंट एण्ड इट्स इम्पैक्ट आन म. प्र. पृ०–25
4 वही, पृ0–25
5 झा, निधि, असहयोग आंदोलन में बैतूल जिले का योगदान, पृ०–75, 1993–94
6 विश्वा मित्र, राजनांदगांव की अवस्था, 1921, पृ०–5
7 बिलासपुर डिस्ट्रिक गजेटियर, 1975, पृ० –75
8 सीतारम्मैया, पट्टाभि, संक्षिप्त कांग्रेंस का इतिहास, पृ० –125 नई दिल्ली – 1985
9 शर्मा, एम.एल., भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, पृ० –144, 1978
10 मिश्रा, डी.पी., हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन मध्यप्रदेश, पृ० 33
11 शुक्ल, प्रयागदत्त, क्रान्ति के चरण, पृ० 34–35
12 सिंह, गुरुमुख निहाल, लैण्ड मार्क्स इन इण्डियन कांस्टिट्यूशन एण्ड नेशनल डेवलपमेंट भाग–1, पृ०–61